आचार्य श्री महाप्रज्ञ प्रवास वयवस्था समिति, श्रीडूंगरगढ़ (बीकानेर)

दूरभाष नं. 01565–224600, 224900

ई–मेल : jstsdgh01565@gmail.com

महासभा द्वारा संबोधन अलंकरण समारोह आयोजित

आचार्य महाप्रज्ञ ने इस कार्यक्रम को 50 प्रवचनों से ज्यादा मूल्यवान बताया

240 श्रावक–श्राविकाओं को किया सम्मानित

तुलसीराम चौरड़िया (मीडिया संयोजक)

श्रीडूँगरगढ़ 19 जनवरी : जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा कलकत्ता द्वारा आयोजित विभिन्न क्षेत्रों में धर्मसंघ की सेवा करने वाले श्रावक–श्राविकाओं को आचार्य महाप्रज्ञ द्वारा शासन सेवी, शासन भक्त, समाधिनिष्ठ, तपोनिष्ठ, श्राविका प्रवर, श्रद्धानिष्ठ, श्रद्धा की प्रतिमूर्ति संबोधन प्राप्त कर्ताओं को सम्मानित करने वाला संबोधन अलंकरण समारोह आयोजित किया गया। श्यामाप्रसाद मुखर्जी स्टेडियम के विशाल मैदान में आचार्य महाप्रज्ञ, युवाचार्य महाश्रमण के सान्निध्य में आयोजित इस समारोह में 240 श्रावक–श्राविकाओं को सम्मानित किया गया। जिनमें समाज भूषण सरदारशहर निवासी स्व. भंवरलाल दुगड़ शासनभक्त श्रीडूँगरगढ़ निवासी रिद्धकरण पुगलिया, शासन सेवी राजस्थान के पूर्व पुलिस उच्च अधिकारी अरुण दुगड़ सहित 15 जनों को समाधिनिष्ठ श्रावक हांसी निवासी स्व. कैलाशचंद जैन को, तपोनिष्ठ श्रावक का संबोधन 3 को श्राविका प्रवर संबोधन जोधपुर, जयपुर प्रवासी स्व. खींवकरण लोढा को प्रदान किया गया। तेरापंथ इतिहास में श्राविका प्रवर संबोधन सर्वप्रथम दिया गया। श्रद्धानिष्ठ श्रावक 133, श्रद्धा की प्रतिमूर्ति श्राविका 92 एवं कल्याण मित्र परिवार रतनगढ़ निवासी बुद्धमल दुगड़ परिवार को और कल्याण मित्र श्रावक के तौर पर 12 जनों को महासभा के अध्यक्ष जसकरण चौपड़ा एवं पदाधिकारियों ने प्रतीक चिन्ह देकर सम्मानित किया।

समारोह को संबोधित करते हुए आचार्य महाप्रज्ञ ने कहा कि अनेक नदियों के मिलन से समुद्र बनता है वैसे ही अनेक व्यक्तियों के मिलने से समाज का निर्माण होता है। समाज के विभिन्न व्यक्तियों के द्वारा विभिन्न क्षेत्रों में धर्मसंघ की सेवा की जाती है। महासभा द्वारा आयोजित ऐसे कार्यक्रम समाज की विशेषताओं के आंकलन का कार्यक्रम है। जो 50 प्रवचनों से भी ज्यादा मूल्यवान है। उन्होंनें कहा कि महासभा धर्मसंघ की संगठन मूल्यक सबसे बड़ी संस्था है। इसके द्वारा समाज के उन व्यक्तियों से परिचित करवाया जाता है जिन्होनें धर्मसंघ को अनेक दृष्टियों से ऊंचाईयां प्रदान की है। मैं इसे देव दुलर्भ समाज मानता हूं जहां समाज एक मात्र आचार्य महाप्रज्ञ की दृष्टि को देखता है। उस के बिना पत्ता भी नहीं हिलता।

युवाचार्य महाश्रमण ने कहा कि मूल्यांकन होने से दायित्व बोध की स्थिति का निर्माण होता है। ज्यादा कार्य करने की एवं योगदान देने की भावना पैदा होती है। उन्होंने कहा कि महासभा समाज की मां है। मां का काम होता है प्रोत्साहन देना और कभी–कभी कड़ाई करना।

स्मणीवृंद के द्वारा प्रस्तुत अष्टकम् से प्रारंभ हुए इस समारोह में महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जसकरण चौपड़ा एवं आचार्य श्री महाप्रज्ञ प्रवास व्यवस्था समिति के संरक्षक बनेचन्द मालू ने आगंतुकों का स्वागत किया। राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं महामंत्री विनोद चौरड़िया ने संबोधन प्राप्त कर्ता 2009 एक परिचय पुस्तिका आचार्य महाप्रज्ञ, युवाचार्य महाश्रमण, साध्वी प्रमुखा कनकप्रभा, मुख्य नियोजिका साध्वी विश्रुतविभा को भेंट की। जैन विष्व भारती के मंत्री भीखमचंद पुगलिया ने जय तिथि पत्र का नवीन अंक पूज्यवरों को समर्पित किया। अमृतवाणी की ओर से 'अष्टक सम्तकम्' नामक सीडी भेंट की गई। कार्यक्रम का संचालन भंवरलाल सिंघी ने किया।

146वें मर्यादा महोत्सव का आज होगा आगाज

तेरापंथ के महाकुंभ के रूप चर्चित 146वें मर्यादा महोत्सव का आगाज आज राष्ट्र संत आचार्य महाप्रज्ञ एवं युवाचार्य महाश्रमण के सान्निध्य में श्यामा प्रसाद मुखर्जी स्टेडियम के विषाल मैदान में दोपहर 12.15 बजे आचार्य

क्रमशः

महाप्रज्ञ के द्वारा 250 वर्ष प्राचीन मर्यादा पत्र की स्थापना के साथ होगा। दिनांक 20 से 22 जनवरी तक चलने वाले इस महोत्सव के प्रथम दिन आचार्य महाप्रज्ञ वृद्ध साधु–साध्वियों के सेवा केन्द्रों में 1 वर्ष के लिए साधु–साध्वियों की नियुक्तियां करेंगे। इस महोत्सव के लिए सारी तैयारियां पूरी कर ली गई हैं।

महोत्सव में होगा 'संवाद भगवान से' कृति का विमोचन

युवाचार्य महाश्रमण द्वारा लिखित कृति 'संवाद भगवान से' का विमोचन आचार्य महाप्रज्ञ महोत्सव के प्रथम दिन करेंगे। किसने किया भगवान से संवाद, कैसे किया संवाद, क्या संवाद किया, क्यों किया संवाद आदि प्रष्नों को समाहित करने वाली इस कृति की प्रथम प्रति युवाचार्य महाश्रमण अपने हाथों से आचार्य श्री को समर्पित करेंगे। इस कृति की पूर्व सूचना मिलते ही लोगों में उत्सुकता पैदा हो गई है।

अ. भा. महिला मण्डल की कार्यशाला का आयोजन, परमार्थ दृष्टि को विकसित करें – आचार्य महाप्रज्ञ

मण्डल की 377 शषाओं में हैं 55 हजार कार्यकर्ता

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मण्डल की कार्यकारिणी कार्यकर्ता प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन राष्ट्रसंत आचार्य महाप्रज्ञ के सान्निध्य में किया गया। संपूर्ण देश में मण्डल की 377 शषाओं में 55 हजार कार्यकर्ता धर्मसंघ की गतिविधियों को संचालित करने के साथ कन्या भ्रूण हत्या के विरोध, साक्षरता अभियान, असमर्थ को चिकित्सा व्यवस्था, बाड़पीड़ितों को सहायता देना आदि अनेक सामाजिक क्षेत्रों में कार्य करती है।

कार्यशाला के शुभारंभ अवसर पर आचार्यश्री महाप्रज्ञ ने मण्डल की कार्यकर्ता बहिनों को अहंकार एवं ममकार का विसर्जन कर परमार्थ दृष्टि को विकसित करने की प्रेरणा प्रदान की। युवाचार्य महाश्रमण ने बहिनों को पंच सूत्रीय कार्यक्रम देते हुए कहा कि बहिनों को सेवा भावी होना चाहिए। मिलनसार, शांत व सहिष्णु होना चाहिए। स्वार्थ की भावना से उपर उठकर कार्य करना चाहिए। समर्पण की भावना होनी चाहिए और एफिसिएन्सी का विकास होना चाहिए। इन पांच गुणों से कार्यकर्ता अपने दायित्वों को सम्यक् रुप से निभा सकता है और सफल हो सकता है। साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा ने बहिनों को सक्रियता की प्रेरणा दी।

कार्यशाला के प्रशिक्षण सत्रों में साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा ने कहा कि कार्यकर्ता बहिनों को अपने भीतर की शक्ति को जगाना होगा और विनम्रता, समर्पण, सहिष्णुता के विकास के साथ अपने क्षेत्र में धर्मसंघ की गतिविधियों को जमीनी स्तर पर लागु कर अपने दायित्वों के प्रति जागरुकता का परिचय देना होगा। उन्होनें कहा कि बहिनें आपस में एक–दूसरों के प्रति सम्मान, एकता एवं एक सूत्रता संघ की सबसे बड़ी सम्पति है इसे सुरक्षित रखें।

सत्र में राष्ट्रीय अध्यक्षा श्रीमती कनक बरमेचा ने सभी बहिनों का स्वागत करते हुए विश्वास जताया कि इस प्रशिक्षण को प्राप्त कर सभी बहिनें दक्षता एवं प्रवीणता के साथ कार्य करेगी। राष्ट्रीय महामंत्री श्रीमति वीणा जैन ने पूरी कार्यकारिणी के प्रति आगामी दो वर्षीय कार्यकाल के लिए मंगलकामना व्यक्त की। श्रीमति पुष्पा बैद ने अपने ''सुविचारों की सौगात'' कार्ड के द्वारा सभी बहिनों का स्वागत किया। इस मौके पर राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं महामंत्री ने पूज्यवरों को किट भेंट की।

सादर प्रकाशनार्थ :–

तुलसीराम चौरड़िया
मीडिया संयोजक